International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 8; August 2016; Page No. 48-56

स्वच्छ भारत अभियान का ग्राम पंचायत स्तरीय आलोचनात्मक विवश्लेषण (ग्राम पंचायत बकैनिया जिला पीलीभीत के विशेष सन्दर्भ में)

[1] Dr Mohammad Israr Khan, [2] Priyanka Verma

[1] Assistant professor, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

[2] Research Scholar, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सारांश

वर्तमान शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान एवं इसके विभिन्न आयामों के सम्बन्ध में जन सामान्य की जागरूकता एवं प्रतिक्रिया का स्तर जानने का प्रयास किया है। स्वच्छ भारत अभियान अखिल भारतीय स्तर पर मुख्यतः खुले में शौच की प्रवृत्ति का 2019 तक मूलतः उन्मूलन करने तथा भारतीयों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस अभियान के अन्तर्गत गरीब परिवारों को मुफ्त में शौचालय की सुविधा उपलब्ध करवायी जाती है जिससे लोगों में शौचालय का उपयेाग करने की प्रवृत्ति जागृत हो सके।

प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर निदर्शतया चयनित 50 लोगों से प्राप्त सूचना/आँकड़ों का प्रयोग करते हुए स्वच्छ भारत अभियान के क्रियान्वयन तथा उसके समाज पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। स्वच्छ भारत अभियान लोगों में स्वच्छता की प्रवृत्ति जागरूक करने तथा खुले में शौच की प्रवृत्ति में कमी करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

मूलशब्दरू शौचालय, जल निकास, स्वच्छता, जल प्रबन्धन, स्वच्छता अभियान।

प्रस्तावना

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को शुरू हुआ। इस योजना का उद्देश्य पूरे देश को स्वच्छ बनाना है। 2 अक्टूबर, 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध कराना है। ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था गाँव में सफाई और सुरक्षित तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध हो। इस अभियान को सफल बनाने के लिए देश के सभी नागरिकों के सहयोग की आशा व्यक्त की गयी। इस अभियान को शुरू करने से पहले ही निर्धारित कर दिया गया कि ये अभियान केवल सरकार का कर्तव्य नहीं बल्कि राष्ट्र को स्वच्छ बनाने की जिम्मेदारी इस देश के सभी नागरिकों की है।

खुले में शौच के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों का उदय होता है। जैसे–हैजा, डायरिया, पीलिया, खसरा आदि। जिसका सभी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इन सभी रोगों के कारण लोगों की कार्यक्षमता में कमी आती है। जिसके कारण सभी विकास के मार्ग से भटक रहे हैं। इस योजना के माध्यम से लोगों से स्वच्छता के लिए सहयोग देने की आशा व्यक्त की। सभी लोगों की मदद के बिना इस योजना को सफल बनाना आसान नहीं है। इसमें गरीब एवं निम्न जाति के लोगों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

इस वित्तीय साधनों में राज्य और केन्द्र सरकार का सहयोग होता है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य सभी परिवारों को शौचालय उपलब्ध कराके खुले में शोच से मुक्त राष्ट्र का निर्माण करना है। लोगों के जागरूक होने से इस अभियान को सफलता मिलेगी।

भारत सरकार द्वारा पहले भी कई कार्यक्रम चलाये गये। सन् 1999 में पूर्ण स्वच्छता अभियान (ज्ैण्ब् ज्वजंस ैंदंजंपवद ब्वउचंपहदम) जून, 2003 के महीने में निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना तथा इसके बाद 2012 में निर्मल भारत अभियान की शुरूआत हुई। जून 2003 के महीने में निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना ने लोगों को पूर्ण स्वच्छता की विस्तृत जानकारी देने पर पर्यावरण को साफ रखने के लिए और पंचायत, ब्लॉक और जिलो द्वारा गाँव को खुले में शौच से मुक्त करने के लिए प्रारम्भ की गयी। इसके बाद यह कार्यक्रम 2 अक्टूबर 2014 को चलाये गये स्वच्छ भारत अभियान के जितने प्रभावशाली नहीं थे।

स्वच्छ भारत अभियान भारत में गरीब परिवारों में शौचालय निर्माण तथा लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने तथा खुले में शौच की प्रवृत्ति को नष्ट करने के लिए चलाया जा रहा है। इससे लोगों के रहन–सहन में बदलाव आएगा तथा इससे होने वाली बीमारियों में कमी आएगी, जिससे लोगों में एक अच्छी सभ्यता विकसित होगी।

लेकिन लोगों की आदतो, गरीबी और संकीर्ण नजरिए की वजह से तथा स्वच्छ भारत अभियान के क्रियान्वयन में फैले भ्रष्टाचार की वजह से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में अभी बहुत पीछे हैं। यदि शौचालय निर्माण के लक्ष्यों को बिना रिश्वत के तथा ईमानदारी से पूरा किया जाए तो 2019 तक भारत को खुले में शौच से मुक्त कराने का कार्य समय से पूरा किया जा सकता है।

स्वच्छ भारत अभियान से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाकर भारत में एक अच्छी सभ्यता का विकास किया जा रहा है जिससे भारत को विश्व मानचित्र पर एक सुसभ्य देश के रूप में दिखाया जा सकेगा। भारत में अस्वच्छता की वजह से जो विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैली हुई हैं उन पर काबू पाया जा सकेगा। इसके लिए स्वच्छ भारत अभियान एक बहुत ही अच्छी योजना है।

1.1 स्मार्ट विलेज एवं स्वच्छ भारत

भारत सरकार ने आई स्पर्श योजना के जरिए गाँवों को स्मार्ट विलेज बनाने के प्लान में 300 करोड़ रुपये की बजट व्यवस्था की और साफ–सफाई का ध्यान रखते हुए स्वच्छ शौचालय निर्माण के लिए करीब 1,546 करोड़ रुपये प्रदान किये। डॉ0 राममनोहर लोहिया समग्र ग्राम विकास एवं जानेश्वर मिश्र ग्राम विकास योजनाओं को जारी रखते हुए वर्ष 2016–17 में 2100 नए गाँव चयनीय करने का लक्ष्य तय किया। इस योजना में बहुत अधिक वित्तीय साधनों को प्रदान किया गया। खराब स्वास्थ्य, कुपोषण और गरीबी से गन्दगी का सीधा नाता है। इससे निजात पाने के लिए 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन के शुरू होने के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग $1\frac{1}{2}$ करोड़ शौचालय का निर्माण किया। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी 50 प्रतिशत लोग खुले में शौच जाते हैं।

इस मिशन का लक्ष्य गांवों में स्वच्छता, शौचालय, शिक्षा, स्वास्थ्य, पानी की व्यवस्था का निर्माण करके गाँवों को विकसित करना है जिससे लोगों में कार्यकुशलता आये और स्थानीय उद्यमिता बढ़े। सभी सुविधाओं के द्वारा गाँव को स्वच्छ और स्वस्थ बनाया जा सके। जिससे गाँव के साथ–साथ सम्पूर्ण भारत को स्वच्छ और स्वस्थ बनाया जा सकेगा। स्वस्थ मानव को मानव पूंजी निर्माण में परिवर्तित करके भारत को समृद्ध बनाया जा सकेगा।

2 शोध उद्देश्य

1. स्वच्छ भारत अभियान के लिए चलाई गई योजनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
2. शौच के लिए बाहर जाने के कारणों का अध्ययन करना।
3. स्वच्छ भारत अभियान द्वारा जन सामान्य के स्वच्छता व्यवहार में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
4. जागरूकता अभियान की सफलता का विश्लेषण करना।

3 साहित्य समीक्षा

सुरेन्द्र कुमार तिवारी के अनुसार (2014) जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य की सुविधा, स्कूल में एक सफल विद्यालय वातावरण और प्रतिरोध बनाता हैं। साफ–सफाई से तथा स्वच्छ जल से रोगों पर नियन्त्रण पाया गया। यह स्वस्थ शारीरिक ज्ञान के वातावरण की ओर पहला कदम हैं। जो ज्ञान और स्वास्थ्य दोनों में लाभ पहुंचाता है। रूद्रेश एस0के0 के अनुसार स्वच्छता की बुनियादी धारणा मानवीय कार्यों को ऐसे तरीके से व्यवस्थित करना है। जिससे जल और भोजन, दूषित न हो। जिससे स्वच्छता और सम्मानीय जीवन प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

डर्मने अभय बी (नवम्बर 2014) के अनुसार स्वास्थ्य और स्वच्छता मानव जीवन के सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं। पूरे देश में स्वच्छता को विकसित करना और स्वच्छता की व्यवस्था करना जन स्वास्थ्य में सर्वाधिक प्रभावी व्यावधानों के बीच है। नायक अपर्णा (2014) के अनुसार अगले पाँच वर्षों में स्वच्छ भारत लक्ष्य को पूरा करने का उद्देश्य भारत में स्वच्छता व्यवस्था में परिवर्तन लाकर उसे ठीक करना है। जो समस्यायें पर्यावरण से घनिष्टता से जुड़ी हुई है उन्हें काफी हद तक कम करना। कुड़ा–करकट का निस्तारण करना। आज हम जलवायु परिवर्तन, जल प्रदूषण, रासायनिकों के प्रयोग के दुष्प्रभाव का सामना करते हैं। शर्मा, बी0 और शैलजा, वद्रा (2015) के अनुसार भारत एक विकासशील देश हैं जो स्वच्छता की ओर केन्द्रित करने का प्रयास कर रहा है। राष्ट्र को सुव्यवस्थित करना चाहता है और जलवायु को स्वच्छ बनाने के बिन्दु को व्युत्पन्न करना चाहता है। आधुनिक भारत ये स्वच्छता पर अध्ययन को केन्द्रित करता है।

सुब्बाराव, वेन्कट पी0 और एस0 सुमाशेखर (2015) के अनुसार स्कूली शिक्षा विभाग, साक्षरता, मानवीय संसाधन विकास मंत्रालय तथा भारत सरकार ने एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्वच्छ भारत और स्वच्छ विद्यालय को शुरू किया जो इसका निर्माण, देखरेख तथा शौचालयों की मरम्मत का विवरण देता हैं तथा व्यक्तिगत व संगठित, दानकर्ताओं को आमन्त्रित करता है।

शर्मा, नीतू, चौधरी, रिचा और पुरोहित, हर्ष (2014) के अनुसार 'हरित लेखांकन अभी तक एक मुख्य मुद्दा है और हमारे देश भाग के विकास के लिए महत्वपूर्ण रूप में लिया जा सकता है जैसे भारत के बैंकिंग एवं वित्तीय संस्थान एक आवश्यक रूप में प्रारम्भ किये गए बल्कि उच्च स्तर पर नहीं। भारतीयों के विकास को बनाए रखने के लिए बैकिंग और वित्तीय संस्थान को ज्यादा काम करना होगा।

तमबोली कुमार प्रदीप और कुमावत आर0एल0 (2013) के अनुसार भारत की जनसंख्या 1.21 बिलियन विश्व की जनसंख्या की लगभग $\frac{1}{6}\text{th}$ के बराबर है। 1980 के शुरूआत में देश में कम से कम 1 प्रतिशत ग्रामीण स्वच्छता को कवर किया गया। 1986 में ग्रामीण स्वच्छता प्रोग्राम Central Rural Sanitation Programme

(CRSP) और 2011 के शुरूआत में भारतीय जनसंख्या के बारे में 72.2 प्रतिशत में 16.78 प्रतिशत करोड़ ग्रहणियां 6,38000 गाँवों में थी। पूर्ण स्वच्छता और स्वास्थ्य जनसंख्या के लिए एक सकारात्मक प्रभाव है और इन सब स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य की कमी से इसका सामाजिक तथा आर्थिक प्रभाव पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

स्वच्छ स्कूल : स्वच्छ भारत व्यवस्था का तात्पर्य स्कूल में पीने के साफ पानी का प्रबन्ध और शौचालय की सुविधायें पिछले कुछ वर्षों से बढ़ गयी है। किन्तु अभी मूल रूप से और नियमों के अनुसार उचित व्यवस्था को अधिक सुधार की आवश्यकता है। सबसे अधिक जल और सफाई सुविधायें प्रत्येक दिन प्रयोग में आती हैं। स्वच्छता के लिए ये सुविधायें अनिवार्य रूप से क्रियान्वित की जायें कि स्कूल में साबुन से हाथ धुलने की सुविधाओं की व्यवस्था और देखरेख शामिल हो।

4 शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में स्वच्छ भारत अभियान का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए जिला पीलीभीत तहसील बीसलपुर, ब्लॉक बिलसण्डा की ग्राम पंचायत बकैनियाँ का चुनाव किया गया है। शोध विषय पर आँकड़ें एकत्र करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ों को एकत्र करने के लिए प्रश्नावली तैयार करके ग्राम पंचायत से 50 लोगों का न्यादर्श लेकर उनसे प्रश्नावली से प्रश्न पूँछे गये थे।

आवश्यक द्वितीयक समंकों को प्राप्त करने के लिए सरकारी प्रकाशनों, समाचार– पत्र तथा इन्टरनेट आदि का प्रयोग किया गया है। एकत्रित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन, प्रतिशत आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके निर्वचन किया गया है।

5 विश्लेषण

जनपद पीलीभीत के विकासखण्ड विलसण्डा के ग्राम पंचायत बकैनियाँ ताल्लुक रामपुर अमृत के चार गाँव बकैनियाँ, भीकमपुर, विक्रमपुर गौटियाँ, मुहम्मदपुर गाँवों में स्वच्छता की स्थिति, गाँव की उन्नति और लोगों के स्वभाव का आलेचनात्मक विश्लेषण निम्न प्रकार है–

5.1 न्यादर्श विवरण

तालिका संख्या 1 में ग्राम पंचायत बकैनियाँ ताल्लुक रामपुर अमृत के अन्तर्गत भीकमपरु, बिक्रमपुर गौटियाँ, मुहम्मदपुर, बकैनियाँ चारों गाँवों का न्यादर्श विवरण प्रतिशत के रूप में दिया गया है।

तालिका 1: न्यादर्श विवरण

लिंग	धर्म	जाति
स्त्री–74 प्रतिशत	हिन्दू – 94 प्रतिशत	OBC – 66 %
पुरुष – 26 प्रतिशत	मुस्लिम – 2 प्रतिशत	SC – 22%
	सिख – 4 प्रतिशत	Gen -12%

स्त्रोत– सर्वेक्षण

स्वच्छ भारत अभियान की जागरूकता के बारे में तथा स्वच्छता अभियान की सफलता के बारे में ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने न्यादर्श में स्वयं की ग्राम पंचायत के 4 गांव में 50 व्यक्तियों से घर–घर जाकर जानकारी प्राप्त की है। इनमें से हिन्दू 94 प्रतिशत, मुस्लिम 2 प्रतिशत, सिक्ख 4 प्रतिशत हैं, जिनमें 74 प्रतिशत महिला तथा 26 पुरूष हैं। इस सर्वेक्षण में OBC के 66 प्रतिशत SC के 22 प्रतिशत और General के 12 प्रतिशत है।

चित्र संख्या–01: सरकारी सहायता द्वारा निर्मित एक शौचालय

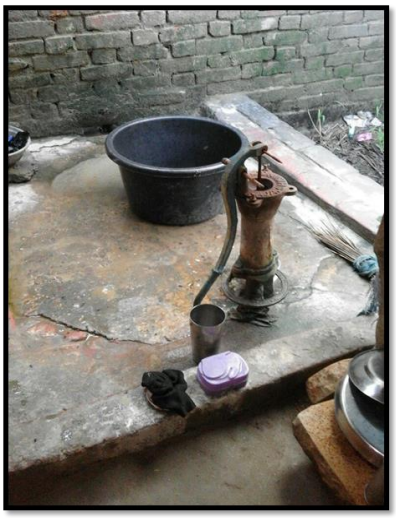

चित्र संख्या–02: बहुउद्देशीय जल स्रोत एवं स्थान

चित्र संख्या–03: बगैर नाली निर्माण की गली

चित्र संख्या–04: ग्राम बकैनियाँ के एक जल स्रोत का दृश्य

चित्र संख्या–05: छप्पर के नीचे चूल्हे पर खाना बनाने की व्यवस्था

स्त्रोत–सर्वेक्षण

चित्र संख्या–06: छप्पर के नीचे बंधी गाय का दृश्य

5.2 परिवार का आकार

तालिका संख्या–02 में परिवार में सदस्यों की संख्या और परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या का विवरण दिया गया।

तालिका 2: परिवार का आकार

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	परिवार में सदस्यों की संख्या	औसत 8 व्यक्ति
2.	परिवार में कमाने वाले सदस्यों की संख्या	औसत 2.26 व्यक्ति

स्त्रोत–सर्वेक्षण

- शोधकर्ता द्वारा सर्वे करने पर पाया कि 50 प्रतिशत परिवारों के सदस्यों की संख्या औसत 8 व्यक्ति हैं। जिसमें कमाने वाले सदस्यों की संख्या औसत–2.26 है।

5.3 शौचालय के आकार एवं शौचालय प्रकृति

शौचालय की प्रकृति निम्न तालिका संख्या 3 में शौचालय है या नहीं लोगों के पास पर्याप्त पूँजी और जगह न होने के कारण शौचालय बनवाने में असमर्थ हैं। शौचालय न होने के कारण लोग बाहर जाते हैं और कुछ लोग परिवार में अधिक सदस्यों की बजह से तथा कुछ आदत की बजह से खुले में शौच के लिए जाते हैं।

तलिका 3: शौचालय प्रकृति

प्रश्न क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	स्वच्छता अभियान के बारे में जानते हैं?	नहीं पता–16 प्रतिशत साफ–सफाई करना–84 प्रतिशत
2.	क्या आपके घर में शौचालय है?	नहीं–46: हाँ– 54 क
3.	शौचालय क्यों नहीं है?	सरकारी अनुदान नहीं मिला–14: सरकारी अनुदान नहीं मिला बनवा नहीं सके–24: सरकारी अनुदान नहीं मिला, जगह नही–6: सभी प्रकार की समस्याएँ–2: शौचालय बना है–54:
4.	शौचालय कहाँ है?	घर में–23: घर से बाहर–29: दोनो जगह–2: बिल्कुल नहीं–46:
5.	शौचालय कैसा है?	सरकारी–16: निजी–36: दोनों–2: शौचालय नहीं–46:
6.	शौचालय किस प्रकार का है?	सोख्ते वाला–40: बहने वाला–14: कैसा भी शौचालय नहीं–46:
7.	क्या शौचालय चालू है?	हाँ–54: नहीं–0: शौचालय नहीं–46:
8.	शौच के लिए बाहर क्यों जाते हैं?	शौचालय नहीं–46: अधिक सदस्य–10: आदत–6: शौचालय में जाते हैं–38:

स्रोत: सर्वेक्षण

- लिए गये न्यादर्श में 84 प्रतिशत लोग स्वच्छता अभियान के बारे में जानते है। जबकि शेष 16 प्रतिशत इस विषय में कुछ भी नहीं जानते। 54 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय है और 46 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है।
- शौचालय न होने की अलग–अलग बजह पायी गयी। 14 प्रतिशत लोगों को सरकारी अनुदान नहीं मिला 24 प्रतिशत लोगों को सरकारी अनुदान नही मिला और वो बनवा नहीं सके। 6 प्रतिशत लोगों का कहना था कि हमारे पास जगह भी नहीं है और सरकारी अनुदान भी नहीं मिला। 2 प्रतिशत लोगों की सभी प्रकार की समस्यायें थी तथा 54 प्रतिशत लोगों के घरो में शौचालय बना हुआ है।
- 23 प्रतिशत लोगों के घरो में शौचालय हैं और 29 प्रतिशत लोगों के घर से बाहर हैं। 2 प्रतिशत लोगों के घर मे और बाहर दोनों जगह शौचालय पाया गया। 46 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है। लगभग 16 प्रतिशत लोगों के शौचालय सरकारी पाये गये और 36 प्रतिशत लोगों के निजी तथा 2 प्रतिशत लोगों के घरों में निजी व सरकारी दोनों मिले। 46 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय ही नहीं है।
- जिन लोगों के घरों में शौचालय है उनमें 40 प्रतिशत सोख्ते वाला और 14 प्रतिशत बहने वाला हैं तथा 46 प्रतिशत लोगों के घरों में कैसा भी शौचालय नहीं है। 54 प्रतिशत लोगों के शौचालय चालू हैं और 46 प्रतिशत लोगों के यहाँ शौचालय ही नहीं है।
- जो लोग शौच के लिए बाहर जाते हैं उनमें 46 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है। 10 प्रतिशत लोग अधिक सदस्यों की वजह से तथा 6 प्रतिशत लोग आदत की बजह से शौच के लिए बाहर जाते हैं। और 38 प्रतिशत लोग शौचालय में जाते हैं।

5.4 शौच सम्बन्धी आदतें एवं व्यवहार

निम्नांकित तालिका संख्या–4 में लोगों की शौच सम्बन्धी आदतों एवं व्यवहार का विवरण दिया गया हैं कि लोग किस समय शौच जाते है, कहाँ जाते हैं एक शौचालय कितने व्यक्ति इस्तेमाल करते हैं आदि।

तालिका 4: शौच सम्बन्धी आदतें एवं व्यवहार

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	शौच किस समय जाते हैं?	सुबह–68: सुबह–शाम–28: कोई समय नहीं–4:
2.	शौच के लिए कहाँ जाते हैं?	शौचालय में–42: बाहर–44: कभी शौचालय में कभी बाहर–12: रोड के किनारे–2:
3.	एक शौचालय कितने व्यक्ति इस्तेमाल करते हैं?	औसतन–3.02
4.	शौच हेतू चयनित स्थान की दूरी क्या है?	औसत–184 मी0
5.	शौच को जाने के लिए रास्ता कैसा है?	गन्दा–44: साफ–16: मेन रोड–4: शौचालय का इस्तेमाल करते हैं–36:

स्रोतः– सर्वेक्षण

- सर्वेक्षण में लिए गये 100 प्रतिशत लोगों के अनुसार 68 प्रतिशत लोग सुबह के समय शौच के लिए जाते हैं तथा 28 प्रतिशत लोग सुबह–शाम दोनो समय जाते हैं। जबकि 4 प्रतिशत लोगों का कोई समय निश्चित नहीं है।
- 42 प्रतिशत लोग शौच के लिए शौचालय का इस्तेमाल करते हैं। 2 प्रतिशत लोग ऐसे है जो रोड के किनारे शौच के लिए जाते हैं। 44 प्रतिशत लोग बाहर जाते हैं तथा 12 प्रतिशत शौचालय में कभी बाहर जाते हैं।
- औसतन 3.02 व्यक्ति एक शौचालय का इस्तेमाल करते है।
- शोध का अध्ययन करने से पता चलता है कि औसतन लगभग 184 मी0 की दूरी तक लोग शौच के लिए जाते हैं।
- शौच के जाने के लिए रास्ता पूछने पर 44 प्रतिशत लोगों ने बताया कि गन्दा, 16 प्रतिशत लोगों ने बताया कि साफ हैं तथा 4 प्रतिशत लोग मेन रोड से जाते हैं। 36 प्रतिशत लोग शौचालय का इस्तेमाल करते हैं।

5.5 शौच एवं स्वच्छता

तालिका संख्या–5 में लोगों में शौच एवं स्वच्छता से सम्बन्धित जागरूकता का विवरण है। लोग किस तरह से स्वच्छता का ध्यान रखते हैं तथा साफ–सफाई किस प्रकार करते हैं।

तालिका 5: शौच एवं स्वच्छता

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	बाहर शौच हेतु किस पानी का प्रयोग करते हैं?	डब्बे का–64:
2.	शौच करने के बाद आप हाथ धोते हैं?	हाँ–98: कुछ लोग कभी धोते हैं कभी नहीं–2:
3.	आप हाथ किससे धोते हैं?	मिट्टी–40: साबुन–58: साबुन या मिट्टी–2:
4.	शौचालय की साफ–सफाई कब करते हैं?	रोजाना–12: महीने में–12: सप्ताह–30: शौचालय नहीं–46:
5.	शौचालय की सफाई किससे करते हैं?	डिटर्जेंट पाउडर–10: हार्पिक–18: फिनायल–18: पानी–6: एसिड–2: शौचालय नहीं–46:

स्त्रोत–सर्वेक्षण

- जो लोग शौच के लिए बाहर जाते हैं वे सब डब्बे में अपना पानी लेकर जाते हैं। 64 प्रतिशत लोग डब्बे में पानी लेकर शौच के लिए बाहर जाते हैं।
- 98 प्रतिशत लोग शौच करने के बाद हाथ धोते हैं तथा 2 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो कभी धोते हैं और कभी नहीं भी धोते।
- 40 प्रतिशत लोग शौच करने के बाद मिट्टी से हाथ धोते हैं। 58 प्रतिशत लोग साबुन तथा 2 प्रतिशत लोग साबुन या मिट्टी से हाथ धोते हैं।
- लोगों से बात करने पर पता लगा है कि 12 प्रतिशत लोग अपने शौचालय की सफाई रोजाना करते हैं। 30 प्रतिशत लोग

सप्ताह में 12 प्रतिशत लोग महीने में साफ करते हैं, जबकि 46 प्रतिशत लोगों के यहाँ शौचालय नहीं है।

- शौचालय की सफाई करने के लिए 10 प्रतिशत लोग डिटर्जेंट पाउडर तथा 18 प्रतिशत हार्पिक का प्रयोग करते हैं। 18 प्रतिशत व्यक्ति फिनायल व 2 प्रतिशत लोग एसिड से शौचालय सफाई करते हैं। 6 प्रतिशत लोग सिर्फ पानी से ही शौचालय की सफाई कर लेते हैं। 46 प्रतिशत लोगों के यहाँ शौचालय नहीं हैं।

5.6 स्वच्छता व्यवहार

तालिका संख्या–6 में लोगों का स्वच्छता से सम्बन्धित व्यवहार किस प्रकार का है लोग रोज नहाते हैं या नहीं घर की साफ–सफाई किस प्रकार करते हैं क्या समयानुसार हाथ धुलते हैं या नहीं, साबुन, मिट्टी का प्रयोग हाथ धोने में करते हैं और कुछ लोग हाथ सिर्फ पानी से हाथ धोते है।

तालिका 6: स्वच्छता व्यवहार

क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या खाना खाने से पहले हाथ धोते है?	हाँ–100:
2.	आप अपने घर की सफाई करते हैं?	रोजाना–100:
3.	पहने हुए कपड़े रोज किससे धोते हैं?	पानी–40: डिटर्जेंट पाउडर–54: साबुन या डिटर्जेंट पाउडर–2: साबुन–4:
4.	क्या आप रोज नहाते हैं?	हाँ–90: नहीं–10:
5.	क्या स्नानगृह है?	नहीं–76: हाँ–24:
6.	स्वच्छता के लिए क्या आवश्यक है?	सभी स्वच्छता–100:

स्त्रोत– सर्वेक्षण

- सभी व्यक्ति खाना खाने से पहले हाथ धोते हैं। इसका परिणाम पूरा 100 प्रतिशत है।
- आँकड़ों से ज्ञात होता है कि 100 प्रतिशत सभी लोग अपने घर की सफाई रोजाना करते है।
- आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि 40 प्रतिशत व्यक्ति रोज पहने हुए कपड़े पानी से तथा 54 प्रतिशत व्यक्ति डिटर्जेट पाउडर से धोते हैं। 2 प्रतिशत व्यक्ति साबुन या डिटर्जेंट पाउडर दोनों से धो लेते हैं तथा 4 प्रतिशत व्यक्ति सिर्फ साबुन से रोज के कपड़े धोते हैं।
- 50 लोगो से बात करने पर शोधकर्ता ने पाया कि 90 प्रतिशत लोग रोज नहाते हैं और 10 प्रतिशत लोग रोज नहीं नहाते है। 76 प्रतिशत लोगों के घरों में स्नानगृह नहीं हैं। गांव में ज्यादा से ज्यादा लोगों के घरो में स्नानगृह नहीं पाये गयें। सिर्फ 24 प्रतिशत लोगों के घरों में स्नानगृह है।
- सभी लोग खाना खाने से पहले हाथ धोते हैं। 100 प्रतिशत लोगों के बताने के अनुसार स्वच्छता के लिए सभी प्रकार की स्वच्छता आवश्यक हैं।

5.7 जल एवं जल निकास आदि

निम्न तालिका संख्या–7 में जल एवं जल निकास से सम्बन्धित विवरण दिया गया है। ग्राम पंचायत में पीने के पानी की व्यवस्था किस प्रकार की है तथा घरों से गन्दे पानी के निकास की व्यवस्था न होने के कारण एक गड्ढ़े में गन्दा पानी भरा रहता है।

तालिका 7: जल एवं जल निकास आदि

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	पानी का क्या साधन है?	निजी नल–88: इंडिया मार्का हैंड पम्प–4: निजी नल, मोटर पंप–8:
2.	आपके नल का पानी कहाँ जाता हैं?	नाली–46: गड्ढे–30: क्यारी–6: खेत–8: तालाब–8: खाली जगह–2:
3.	क्या घर के बाहर नाली हैं?	हाँ–48: नहीं–52:
4.	नाली कैसी है?	कच्ची–20: पक्की–26: ढालू खडन्जे की नाली–2: नाली नहीं–52:
5.	नाली की सफाई कौन करता है?	स्वयं–46: सफाई कर्मी–2: नाली नहीं–52:
6.	सफाई कर्मी रोज आता है?	नहीं–100:
7.	क्या रास्ते के पानी का निकास है?	हाँ–66: नहीं–34:
8.	गांव का रास्ता कैसा है?	कच्चा–32: पक्का–60: खडन्जा–4: खेतों में फार्म हाउस–4:

- आँकड़ों से पता चलता है कि 88 प्रतिशत लोगों के घरो में निजी नल और 8 प्रतिशत लोगों के घरों में निजी नल तथा मोटर पम्प है। 4 प्रतिशत लोगों के घरों में नल नहीं है, इंडिया मार्का हैंड पम्प का प्रयोग करते है।
- जिन लोगों के घर के बाहर नाली बनी हुई हैं उनमें से 46 प्रतिशत लोगों के नल का पानी नाली में तथा 30 प्रतिशत गड्ढे में जाता है। गांव में घर में क्यारी बना लेते हैं 6 प्रतिशत लोग अपने नल का पानी क्यारी में व 8 प्रतिशत लोगों के नल का पानी उनके घर से लगे खेतों में जाता है। 8 प्रतिशत कच्ची नाली बना के नल के पानी को तालाब में छोड़ते हैं और 2 प्रतिशत लोग अपने नल के पानी को खाली पड़ी जगह में छोड़ देते हैं जिससे मक्खी, मच्छर उत्पन्न होते हैं।
- 48 प्रतिशत लोगों के घरो के बाहर नाली हैं और 52 प्रतिशत लोगों के घरों के बाहर नाली नहीं है। नाली न होने के कारण पानी रास्तो में भर जाता है।
- गांव से शोध अध्ययन में लिए गये 100 प्रतिशत लोगो के अनुसार 20 प्रतिशत लोगों के घर के बाहर कच्ची नाली हैं 26 प्रतिशत पक्की नाली तथा 2 प्रतिशत ढालू खडन्जे की नाली हैं। बाकि के 52 प्रतिशत लोगों के घर के बाहर नाली नहीं है। कच्ची और ढालू खड़न्जे वाली नाली टिकाऊ नहीं होती है।
- सरकार द्वारा लगाये गये सफाई कर्मचारी गांव में नाली की सफाई करने नही आते हैं मात्र 2 प्रतिशत नाली की सफाई सफाई कर्मचारी करते हैं। 46 प्रतिशत लोग नाली की सफाई स्वयं करते हैं। 52 प्रतिशत नाली नहीं है। 100 प्रतिशत नाली की सफाई करने रोज नहीं आते हैं।

- 66 प्रतिशत लोगों ने बताया कि रास्ते का पानी निकल जाता है जबकि 34 प्रतिशत लोगों के बताने के अनुसार रास्ते में पानी का कोई निकास नहीं है। जिससे गांव के रास्ते में कीचड़ हो जाती है।
- गाँव का रास्ता 32 प्रतिशत कच्चा 60 प्रतिशत पक्का तथा 4 प्रतिशत खडन्जे वाला रास्ता है। 4 प्रतिशत लोग खेतों में फार्म हाउस बनाकर रहते हैं।

5.8 खाना बनाने की व्यवस्था

निम्नलिखित तालिका संख्या–8 में खाना बनाने की व्यवस्था के बारे में बताया गया है जिसमें 68 प्रतिशत चूल्हे का प्रयोग होता है, गाँव में कम मात्रा में रसोईघर है।

तालिका 8: खाना बनाने की व्यवस्था

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या रसोई घर हैं?	हाँ–38: नहीं–62:
2.	खाना किस पर बनता है?	चूल्हा–68: रसोई गैस–10: दोनों–22:
3.	खाना कहाँ बनता है?	खुले में–26: पन्नी या छप्पर के नीचे–24: रसोई में–30: बरामदे में–6: टीन या खपड़ैल में–10: खुले और रसोई दोनो जगह–4:

स्त्रोत– सर्वेक्षण

- अध्ययन के अनुसार गांव में 38 प्रतिशत लोगों के घरों में रसोई घर है तथा 62 प्रतिशत घरों में रसोई घर नहीं है। गांव में लोग छोटी कच्ची दीवारों पर छाया करके रसोई घर बना लेते हैं।
- गांव में लकड़ी का भरपूर ईंधन उपलब्ध होता है। गरीबी के कारण मात्र 10 प्रतिशत लोग ही रसोई गैस का प्रयोग करते हैं। 68 प्रतिशत लोग चूल्हे का तथा 22 प्रतिशत लोग रसोई गैस व चूल्हा दोनों का प्रयोग करते हैं।
- शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि 26 प्रतिशत लोगों के घरो में खाना खुले में और 24 प्रतिशत लोगों का खाना पन्नी या छप्पर के नीचे बनता है। गांव में मात्र 30 प्रतिशत लोगों का खाना रसोई घर में बनता है। जगह कम होने के कारण घर में रसोई घर नहीं बनवाते 6 प्रतिशत बरामदे में खाना बनाते हैं। 10 प्रतिशत लोग टीन या खपड़ैल में तथा 4 प्रतिशत ऐसे हैं जो गर्मियों में खुले में और सर्दियों में व बरसात में रसोई में खाना बनाते हैं।

5.9 घर का प्रकार

तालिका संख्या–9 में घर के प्रकार के बारे में बताया गया है कि घर किस प्रकार का है और उसमें क्या–क्या सुविधाएँ हैं?

तालिका 9: घर का प्रकार

क्र0सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	घर कैसा है?	कच्चा–38: पक्का–52: आधा कच्चा, आधा पक्का–10:
2.	क्या आपके घर में बैठक हैं?	हाँ–18: नहीं–82:
3.	क्या आपके घर में बिजली है?	हाँ–36: नहीं–62: सोलर पैनल–2:
4.	क्या आपके घर में पशुशाला है?	हाँ–50: नहीं–50:

स्त्रोत–सर्वेक्षण

- आँकड़ों का अध्ययन करने से पता चलता हैं कि 38 प्रतिशत लोगों का घर कच्चा और 52 प्रतिशत पक्का है। 10 प्रतिशत लोगों के घर आधे कच्चे हैं और आधे पक्के बने हुए हैं। 2 प्रतिशत एक कमरा टीन पड़ा हुआ है।
- 18 प्रतिशत घरों में बैठक हैं। तथा 82 प्रतिशत घरो में बैठक नहीं है।
- 36 प्रतिशत घरो में बिजली हैं और 62 प्रतिशत घरों में नहीं है। गाँव में आधे से अधिक घरो में बिजली नहीं पायी गयी। 2 प्रतिशत लोगो ने अपने घर में सोलर पैनल लगवा रखा है।
- सर्वे के माध्यम से पता चलता है कि आधे घरों में पशुशाला है और 50 प्रतिशत घरों में नहीं है।

5.10 महिलाओं की सुरक्षा एवं विकास

तालिका संख्या–10 में जो महिलाएं खुले में शौच के लिए जाती हैं। उनकी सुरक्षा और बालक–बालिकाओं की शिक्षा सम्बन्धी विकास का विवरण दिया गया है।

तालिका 10: महिलाओं की सुरक्षा एवं विकास

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या खुले में शौच जाने से महिलाएँ सुरक्षित हैं?	नहीं–100:
2.	आप किसे पढ़ाना और आगे बढ़ाना चाहते हैं?	बेटा–26: बेटी–2: दोनों–72:

स्त्रोत– सर्वेक्षण

- खुले में शौच जाने से महिलाएँ असुरक्षित हैं यह सभी जानते है लेकिन फिर भी लोगों को खुले में जाना पड़ता है।
- 26 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो सिर्फ बेटे को पढ़ाना चाहते है और 72 प्रतिशत लोग दोनो को पढ़ाना चाहते है। बेटा और बेटी दोनो को पढ़ाने का प्रतिशत अधिक है। 2 प्रतिशत लोग सिर्फ बेटी को पढ़ाना चाहते हैं क्योंकि उनके बेटे नहीं है। यह एक बहुत बड़ी सफलता है कि लोगो ने बेटा और बेटी में भेदभाव करना कम कर दिया।

5.11 सरकारी क्षेत्र की भूमिका

निम्न तालिका संख्या–11 में सरकारी कार्यों के प्रति लोगों के नजरिए को बताया गया है।

तालिका 11: सरकारी क्षेत्र की भूमिका

क्र0 सं0	प्रश्न	उत्तर
1.	क्या सरकार द्वारा बनवाये शौचालय टिकाऊ हैं?	नहीं
2.	क्या शौचालय बनवाने का काम वास्तविकता से पूरा हैं?	नहीं
3.	बिना रिश्वत दिये आपका काम होता है?	नही

स्त्रोत– सर्वेक्षण

- सर्वेक्षण के अनुसार जो लोग शौचालय बनवाने का ठेका लेते हैं वह शौचालय निर्माण के लिए अच्छी गुणवत्ता की सामग्री नहीं प्रयोग करते हैं इसलिए शौचालय टिकाऊ नहीं है।
- सर्वेक्षण के अनुसार शौचालय बनवाने का काम वास्तविकता में पूरा नहीं हैं।
- 100 प्रतिशत लोगों ने बताया है कि उनका कोई भी काम बिना रिश्वत के नहीं होता है।

6. प्राप्तियाँ

- स्वच्छ भारत अभियान से लगभग 84 प्रतिशत लोगों को स्वच्छता के बारे में जानकारी हुई है। जिससे वो स्वच्छता के प्रति जागरूक हुए है।
- वो गरीब लोग जो गरीबी की वजह से शौचालय निर्माण को आवश्यक नहीं समझते थे। अब वित्तीय सहायता से उनके घर में भी शौचालय निर्माण सम्भव हो पाया है।
- शौचालय निर्माण से सभी लोगों की खासकर महिलाओं की सुरक्षा में बढ़ोत्तरी हुई है।
- शौचालय निर्माण से खेतों व सड़कों में गन्दगी में कमी आयी है।
- खुले में शौच में कमी से प्रदूषण में कमी आयी है। जिससे हैजा, चेचक आदि बिमारियों में कमी आयी है।
- घर में शौचालय होने से उनके समय की भी बचत होने लगी है जो शौच के लिए खुले में जाया करते थे।

7. सीमाएँ

- अभी भी लगभग 46 प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय नहीं है।
- लगभग 16 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो अभी भी घर में अधिक सदस्य होने या उनकी आदत होने की वजह से घर से बाहर खुले में शौच के लिए जाते हैं।
- लोगों के लिए अभी भी साफ सफाई की ठीक से जानकारी नहीं है क्योंकि उनमे जागरूकता की कमी है।
- पानी के निकास की सुविधाएँ नहीं हैं।
- सरकार द्वारा जो शौचालय बनवाये जा रहे हैं। वो टिकाऊ नहीं हैं।
- जिन शौचालयों का निर्माण हुआ हैं वो भी बिना रिश्वत दिये नहीं हो पाया है।
- कागजो में जितने शौचालयों का निर्माण किया गया है वह वास्तविकता में पूरा नहीं किया गया हैं।

8. सुझाव

- स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए सभी घरों में शौचालय निर्माण अति आवश्यक है।
- स्वच्छ भारत अभियान के तहत लोगों को पूरी तरह जागरूक करना है जिससे अधिक सदस्यों वाले घरो में भी यें शौचालय हो तथा वो उनका प्रयोग भी करने की आदत विकसित करे। तथा उनमें साफ सफाई के प्रति जानकारी बढ़ेगी, जिससे उनमें सफाई की आदत विकसित होगी।
- पानी के निकास की व्यवस्था ठीक करना, जिससे किसी भी प्रकार की गन्दगी से निकास में असुविधा न हो।
- शौचालय निर्माण में गुणवत्तापूर्ण सामग्री का उपयोग किया जाए, जिससे शौचालय टिकाऊ बन सकें।
- शौचालय निर्माण में भ्रष्टाचार को खत्म किया जाए। जिससे बिना रिश्वत के प्रत्येक शौचालय का निर्माण हो सके तथा इस योजना को सफल बनाया जा सके।

9. निष्कर्ष

अधिकाँश लोग स्वच्छता के प्रति जागरूक हैं। अपने घर तथा अपने आस–पड़ोस में स्वच्छता की चाह भी रखते हैं, परन्तु कुछ कमियों जैसे निम्न आय स्तर, जगह की अनुपलब्धता आदि की बजह से शौचालय उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। खेतों में काम करने के कारण कुछ लोग रोज नहाते भी नहीं हैं। गाँव में पानी की उचित निकास व्यवस्था न होने के कारण लोग गन्दा पानी एक जगह जमा करने पर मजबूर हैं। विक्रमपुर गौटियाँ में सबसे बुरा हाल है इस गाँव के सभी लोग खुले में शौच के लिए जाते हैं। गाँव का रास्ता भी अच्छा नहीं है। जगह–जगह वारिश का पानी जमा हो जाता है।

कुछ हद तक लोगों की स्वयं को स्वच्छ रखने के लिए अपनी गन्दगी दूसरों की तरफ उछालना तथा ''साफ–सफाई करना हमारा कार्य नहीं'' जैसी संकीर्ण मानसिकताओं को दूर किए बिना स्वच्छ भारत अभियान की सफलता सुनिश्चित नहीं की जा सकती। जब तक लोग इतने जागरूक नहीं हो जाते कि वह स्वच्छता को अपना कर्तव्य न समझने लगे तब तक सम्पूर्ण स्वच्छ भारत अभियान एक सपना है। साथ ही साथ स्वच्छ भारत अभियान को कायिक स्वच्छता से आगे बढ़कर सामाजिक एवं व्यावहारिक स्वच्छता को बढ़ावा देने हेतु कर्तव्यशील बनाने की अत्यन्त महती आवश्यकता है।

10. References

1. Surendra Kumar Tiwari. The Study of Awareness of A National Mission: Swach Vidyalaya in the Middle School Student of Private and Public Schools. PARIPEX Indian Journal of Research (ISSN 2250-1991). 2014. www.paripex.in / http://indianjournalresearch.com
2. Rudresh Kumar Sugam, Sonali Mittra, Arunabha Ghosh. Kachra Mukt, Shouchalaya Yukt Bharat. Council on Energy, Environment and Water. 2014, 584. http://ceew.in
3. Mane Abhay B. Swachh Bharat Mission for India's Sanitation Problem: Need of the Hour. Unique Journal of Medical and Dental Sciences (ISSN 2347-5579). 2014; 02(04):58-60. www.ujconline.net
4. Aparna Nayak. Clean India. Journal of Geoscience and Environment Protection, 2015; 03:133-139. doi: 10.4236/gep.2015.35015. Down loaded on 28 July 2015 from http://creativecommous.org/licenses/by/4.0.
5. Sharma V, Badra Shailja. International Journal of Advance Research in Science and Engineering (IJARSE). 2015; 4(01). http://www.IJARSE.com. ISSN – 2319-8354 (E).
6. Venkata Subbarao P, Somasekhar S. Swachh Bharat: Some Issues and Concern. International Journal of Academic Research. ISSN 2348-7666. 2015; 2, 4(4). http://ijar.org.in
7. Neetu Sharma, Richa Chaudhary, Harsh Purohit. A Comparative Study on Green Initiatives Taken by Selected Public and Private Sector Banks in Mumbai. ISOR Journal of Business and Management (IOSR-JBM), e-ISSN: 2278-4878, -2319-7678. 2014, 32-37. www.josrjournals.org

8. Pradeep Kumar Tamboli, Kumawat RL. Role of Corporate Social Responsibility (CSR) in Swachh Bharat Abhiyan. "ASM" International E-Journal ongoing Research in Management and IT. 2015, 190. E-ISSN 2320-0065. http://www.ASME-Journal.com
9. A National Mission. A Hand Book on Swachh Bharat Swachh Vidyalaya. 2014. http://scholar.havard.edu/files/adukia-sanitation-and-education